जिससे उनमें सत्त्वगुण का विकास हो। वस्तुतः सात्त्विकी शिक्षा मिलने पर वे धीर और यथार्थ ज्ञानी हो जायेंगे और सर्वत्र सुख-समृद्धि छा जायगी। यदि जनता का अल्प अंश भी कृष्णभावनाभावित होकर सत्त्वगुण में स्थित हो जाय, तो सम्पूर्ण विश्व में सुख-समृद्धि हो सकती है। अन्यथा, यदि संसार रजोगुण और तमोगुण में ही लगा रहा, तो सुख-शान्ति दुर्लभ रहेगी। रजोगुण के बढ़ने पर लोगों में विषयतृष्णा की कोई सीमा नहीं रहती। पर्याप्त धन और इन्द्रियतृप्ति के साधनों के रहते भी न सुख मिलता है और न मन की शान्ति ही मिलती है। वास्तव में रजोगुण में सुख अथवा शान्ति की उपलब्धि कभी नहीं हो सकती। धन से सुख-शान्ति नहीं होती, उसके लिए आवश्यक है कि कृष्णभावना के अभ्यास से सत्त्वगुण में स्थित हो जाय। रजोगुणी मानसिक रूप से ही अशान्त नहीं रहता, उसका कार्य-व्यवसाय भी अत्यन्त कष्टमय होता है। जीवन-स्तर को बनाए रखने के लिए नाना प्रकार की योजनाओं और युक्तियों का चिन्तन करना पड़ता है। यह सब दुःखमय है। तमोगुण में तो लोग प्रमत्त ही हो उठते हैं। परिस्थितिवश विषादमग्न होने के कारण वे मादक द्रव्यों का आश्रय लेते हैं और इस प्रकार उनका अज्ञान में ही उत्तरोत्तर अधःपतन होता जाता है। उनका भविष्य बड़ा अंधकारमय है।

ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः।।१८।।

ऊर्ध्वम्=उच्च लोकों को; **गच्छन्ति**=जाते हैं; **सत्त्वस्थाः**=सत्त्वगुणी पुरुष; **मध्ये**=मध्य अर्थात् मनुष्यलोक में ही; **तिष्ठन्ति**=रहते हैं; **राजसाः**=रजोगुणी; **जघन्य**=अधम; **गुण**=गुण; **वृत्तिस्थाः**=कार्य में स्थित; **अधः**=अधोगति को; **गच्छन्ति**=जाते हैं; **तामसाः**=तमोगुणी प्राणी।

अनुवाद

सत्त्वगुणी पुरुष स्वर्गादि उच्च लोकों को जाते हैं, रजोगुणी पृथ्वी (मनुष्य लोक) में ही रहते हैं और तमोगुणी प्राणी नरकों में गिरते हैं।।१८।।

तात्पर्य

इस श्लोक में माया के अलग-अलग तीनों गुणों में किये गये भिन्नभिन्न कर्मों के फल का अधिक स्पष्ट वर्णन है। एक उच्च स्वर्गीय लोकों का वर्ग है, जहाँ सब निवासी उच्चवृत्ति में निष्ठ हैं। सत्त्वगुण के विकास के अनुसार जीव को इस वर्ग के नाना लोकों की प्राप्ति होती है। इन लोकों में सबसे उच्च सत्यलोक अथवा ब्रह्मलोक है, जहाँ इस ब्रह्माण्ड के प्रधान जीव, ब्रह्माजी का निवास है। आठवें अध्याय में वर्णन हो चुका है कि ब्रह्मलोक की अद्भुत जीवन-स्थिति का हम अनुमान तक नहीं लगा सकते। परन्तु सात्त्विकी उत्तम जीवन वृत्ति से इसकी प्राप्ति हो सकती है।

रजोगुण पुण्य और पाप से मिश्रित रहता है। यह सत्त्वगुण और तमोगुण के बीच है। मनुष्य निरन्तर बस एक गुण में नहीं रहता। यदि वह सदा रजोगुण में स्थित